प्रो० सुधीर कुमार सिंह, प्राचार्य, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम समाजशास्त्र विभाग

ग्रामीण समाजशास्त्र, प्रश्नपत्र – VI, बी०ए० (H)

खण्ड – III

संस्कृतिकरण का अर्थ – भारतीय समाज में परम्परावादिता और प्रगति के बीच संघर्ष रहा है। लेकिन फिर भी यह सामाजिक परिवर्तन को रोक नहीं सका है। दक्षिण भारत के कुर्ग लोगों के सामाजिक व धार्मिक जीवन के विश्लेषण में डा. श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण शब्द को सर्वप्रथम काम में लिया। डॉ० श्रीनिवास ने अपनी पुस्तक 'Religion and Society among the Coorgs of South India' में जाति की प्रक्रिया को व्यक्त करते हुए संस्कृतिकरण के प्रत्यय का प्रयोग किया। जाति प्रथा में गतिशीलता सदैव मध्य जातियों में सम्भव रही है।

Pro. M.N. Shrinivas ने अपनी पुस्तक "Social change in Modern India" में लिखा है कि संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई निम्न हिन्दू जाति या कोई जनजाति अथवा कोई अन्य समूह किसी उच्च और प्रायः द्विज जाति की दिशा में अपने रीति-रिवाज, कर्मकाण्ड, विचारधारा और पद्धति को बदलता है। सामान्यतः ऐसे परिवर्तन के बाद निम्न जाति, जातीय संस्तरण की प्रणाली में

स्थानीय समुदाय में उसे परम्परागत रूप से जो स्थिति प्राप्त है उससे उच्च स्थिति का दावा करने लगती है। सामान्यतः कुछ दिनों तक बल्कि वास्तव में एक-दो पीढ़ियों तक दावा किये जाने के बाद ही उसे स्वीकृति मिलती है।" डॉ० योगेन्द्र सिंह ने संस्कृतिकरण की अवधारणा पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि इस अवधारणा के दो पक्ष – 1. ऐतिहासिक संदर्भ – इसमें भारतीय समाज के इतिहास में संस्कृतिकरण सामाजिक गतिशीलता की एक प्रक्रिया रही है। 2. समकालिक अर्थ में सापेक्षिक भाव में संस्कृतिकरण परिवर्तन की एक प्रक्रिया है

संस्कृतिकरण की विशेषताएं –

(1) संस्कृतिकरण का सम्बन्ध निम्न जातियों से है – जब निम्न जातियां द्विज जातियों या प्रभु जाति (Dominant Caste) की प्रथाओं, परम्पराओं, देवी-देवताओं एवं जीवनशैली को अपना कर जाति-संस्तरण में ऊँचा उठने का प्रयत्न करती है तो उसे संस्कृतिकरण कहते हैं।

(2) संस्कृतिकरण सामाजिक गतिशीलता को प्रकट करने वाली प्रक्रिया है – संस्कृतिकरण करनेवाली जाति अपने आर्थ-जीव

की जातियों से ऊपर उठ जाती है और इससे नीचे उतर जाती है, पर यह सब अलग सोपान में भी होता है, सकें व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं होता।

(3) संस्कृतिकरण केवल हिन्दू जातियों तक सीमित नहीं है बल्कि जनजातियों तथा अर्द्ध-जनजातियों समूहों में भी यह प्रक्रिया पायी जाती है। पश्चिमी भारत के भीलों, मध्य भारत के गोंडों तथा ओरांवों तथा हिमालय के पहाड़ी लोगों ने हिन्दुओं की जीवन पद्धति का अनुकरण करने का प्रयास किया है।

(4) संस्कृतिकरण की प्रक्रिया का संबंध किसी एक व्यक्ति या परिवार से नहीं है बरन एक समूह से है - यदि कोई अकेला व्यक्ति या परिवार की ऊपर की ओर गतिशील होता है तो उसके लिए अपने बेटों के लिए बहुएं और बेटियों के लिए वर प्राप्त करने की कठिनाई पैदा हो जाती है। अतः संस्कृतिकरण एक व्यक्ति तथा परिवार द्वारा न किया जाकर एक समूह द्वारा किया जाता है।

(5) संस्कृतिकरण के कई आदर्श हो सकते हैं - एक निम्न जाति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा किसी प्रभु जाति को आदर्श मानकर उसके रीतिरिवाजों, प्रथाओं, खान-पान और जीवन शैली को अपना सकती है क्योंकि एक जाति के लिए अपने से ऊपर की वे जातियां आदर्श होती हैं जिनसे उनकी सबसे अधिक समीपता हो।

(6) जब किसी जातीय समूह का संस्कृतिकरण होता है तो वह किसी उच्च जाति की प्रथाओं और जीवन-पद्धति को ही नहीं अपनाता बल्कि साहित्य में उपलब्ध कुछ नवीन विचारों एवं मूल्यों को भी स्वीकार कर लेता है।

(7) संस्कृतिकरण की प्रक्रिया एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो भारतीय इतिहास के प्रत्येक काल में दिखायी देती है। श्रीनिवास ने वैदिक काल से लेकर आज तक के समय में निम्न जातियों द्वारा ऊँचा उठने के प्रयासों का अनेक उदाहरणों द्वारा उल्लेख किया है।

—— x ——